© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन पर विवेचना

Shrichand Kamat , skamat15@gmail.com

सार

भारत की अकूत संपदा से आकर्षित होकर विभिन्न यूरोपीय जातियाँ समय-समय पर आती रहीं । परंतु 15वीं शताब्दी में कुछ महत्वपूर्ण भौगोलिक खोजों के पश्चात यह प्रक्रिया काफी तेज हो गयी । कालांतर में विभिन्न यूरोपीय देशों की कंपनियों ने व्यापार के उद्देश्य से भारत में प्रवेश किया । सर्वप्रथम पुर्तगाली जलमार्ग होते हुए भारत आये, उनके बाद क्रमशः डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसी भारत आये। जल्द ही भारत के समुद्र के निकटवर्ती और समुद्री इलाकों व सामुद्रिक व्यापर पर यूरोपियों का एकाधिकार हो गया। 15 वीं शताब्दी के समापन के वर्षों में, पुर्तगाली खोजकर्ता वास्कोडीगामा दक्षिण भारत के कालीकट पहुंचे थे। तब से, फ्रांसीसी, डच और बाद में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने भारत में खूब धन कमाया । 18 वीं शताब्दी तक, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य ने अपना वर्चस्व पहले ही स्थापित कर लिया था । विशाल भारतीय क्षेत्र के स्वतंत्र शासकों में एकता की व्यापक कमी का अंग्रेजों ने भरपूर लाभ उठाया।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

मुख्य शब्द : भारत, विदेशी व्यपार, पुर्तगाली जलमार्ग, फ्रांसीसी, ब्रिटिश साम्राज्य आदि।

प्रस्तावना

पुर्तगाली: 1 मई, 1498 को जलमार्ग से सर्वप्रथम पुर्तगाली नाविक वास्को-डि-गामा भारत आया था। भारत के लिए समुद्रीमार्ग की खोज का श्रेय पुर्तगालियों को ही दिया जाता है। वास्को -डि-गामा समुद्रीमार्ग से भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट नामक स्थान पर आया। वहां का तत्कालीन हिन्दू शासक जमोरिन था। जमोरिन ने ही कालीकट पर वास्कोडिगामा का स्वागत किया था। वास्को-डि-गामा को व्यापार करने की सुविधा जमोरिन ने ही प्रदान की थी। यूरोपियों का भारत में आने का मुख्य मकसद व्यापार करना था। वास्को-डि-गामा ने 'केप ऑफ गुड होप' के रास्ते भारत तक के समुद्री मार्ग की खोज की थी ।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

भारत में लाल मिर्च, काली मिर्च और तंबाकू की खेती पुर्तगालियों की ही देन थी। भारत में जहाज निर्माण और प्रिंटिंग प्रेस तकनीक लाने का श्रेय भी पुर्तगालियों को ही जाता है। 1556 ई. में भारत में पहली प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना पुर्तगालियों द्वारा ही की गयी थी। बंगाल में पुर्तगालियों द्वारा स्थापित पहली फैक्ट्री हुगली थी।

पांडिचेरी पर कब्ज़ा करने वाले पहले यूरोपीय पुर्तगाली ही थे, जिन्होंने 1793 ई. में पांडिचेरी पर अपना आधिपत्य कायम किया था। 17वीं शताब्दी तक पुर्तगालियों की शक्ति भारत में डचों के आगमन, धार्मिक असहिष्णुता और पुर्तगाली शाही सरकार के हस्तक्षेप के कारण क्षीण होने लगी और भारत में पुर्तगालियों का एकाधिकार समाप्त हो गया।

डच (हॉलैंड): डच लोग जोकि हॉलैंड के निवासी थे 1596 ई. में भारत आये थे। डचों ने 1602 ई. में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना भी की थी। डचों द्वारा ही भारत से व्यापार हेतु सर्वप्रथम संयुक्त पूंजी कम्पनी शुरू की गयी थी। बंगाल के चिनसुरा में ड्चों ने एक कारखाना भी स्थापित किया था। डच लोगों का मुख्य उद्देश्य दक्षिण-पूर्वी एशिया के टापुओं पर व्यापार करना था भारत उनके व्यापारिक मार्ग में पड़ने वाली बस एक कड़ी था।

डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर कोचि में फोर्ट विलियम्स का निर्माण किया था। डचों ने गुजरात, कोरोमण्डल, बंगाल और ओडिशा आदि में व्यापारिक कोठियां खोली थी। डचों ने पहली कोठी मुसलीपट्टम में स्थापित की तथा दूसरी पुलीकट में की थी।

17वीं शताब्दी में डच व्यापारिक शक्ति चरम पर थी। डच लोग भारत से सूती वस्त्र, अफीम, रेशम तथा मसालों आदि महत्वपूर्ण वस्तुओं का निर्यात करते थे। 1759 ई. में अंग्रेजों और डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ था, जिसमें डच इतनी बुरी तरह हारे की भारत से उनके पैर ही उखड गए। यही कारण था कि 38 वीं शताब्दी में अंग्रेजों (ब्रिटिश) के सामने डचों की शक्ति क्षीण पड़ गयी।

अंग्रेज (ब्रिटिश): भारत में व्यापार हेतु आयी सभी यूरोपीय कंपनियों में से अंग्रेज (ब्रिटिश) सबसे शक्तिशाली थे। 1599 ई. में जॉन मिल्डेनहॉल नामक पहला अंग्रेज भारत आया था। 31 दिसम्बर, 1 600 में इंग्लैंड की तत्कालीन महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा ब्रिटिश कंपनी को भारत से 15

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

वर्षों तक व्यापार हेतु अधिकार पत्र प्रदान किया गया। स्थल मार्ग से लीवेंट कंपनी को तथा समुद्री मार्ग से ईस्ट इंडिया कंपनी को अधिकार पत्र प्रदान किया गया था।

इसी कंपनी से 1608 ई. में कैप्टन हॉकिन्स तत्कालीन मुगल शासक जहांगीर के दरबार में इंग्लैंड का राजदूत बनकर आया था। भारत में अपने व्यापार को बढ़ाने के उद्देश्य से हॉकिन्स ने सूरत में बसने की गुजारिश की और जहांगीर को उपहार स्वरूप दस्ताने और इंग्लैंड में प्रयोग की जाने वाली बग्घी दी। जिससे प्रशन्न होकर जहांगीर ने कैप्टन हॉकिन्स को इंग्लिश खां' की उपाधि प्रदान की थी। पुर्तगालियों और अन्य स्थानीय व्यपारियों के विरोध के कारण जहांगीर चाहकर भी अंग्रेजो को सूरत में बसने की आज्ञा न दे सका। फलस्वरूप अंग्रेजों ने बल पूर्वक 1611व ई. में कैप्टन मिडल्टन द्वारा स्वाली या स्वाव्ठी नामक जगह पर पुर्तगालियों के जहाजी बेड़े को हराकर भगा दिया जिसके परिणामस्वरूप 1613 ई. में जहांगीर ने फरमान जारी कर अंग्रेजों को सूरत में स्थायी व्यापारिक कोठी बनाने की आज्ञा दे दी। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1613 ई. में पहला कारखाना सूरत में स्थापित किया गया था। अंग्रेजों द्वारा पहली व्यापारिक कोठी 1611 ई. में मुसलीपट्टनम में खोली गयी थी।

23 जून, 1757 ई. में हुए प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों का भारत पर पूर्णतः प्रभुत्व हो गया था। प्लासी का युद्ध ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी तथा बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच हुआ था, जिसमें अंग्रेज सेना का नेतृत्व राबर्ट क्लाइव द्वारा किया गया था, ततपश्चात 22 अक्टूबर, 1764 में हुए बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की जीत के बाद भारत में कोई भी ऐसी राजनितिक शक्ति या शासक शेष नहीं बचा जो अंग्रेजों को हरा सके। बक्सर का युद्ध बक्सर नगर के पास ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और मुगल नवाबों (बंगाल के नबाब मीर कासिम, अवध के नबाब शुजाउद्दौला, तथा मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना) के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व मेजर हेक्टर मुनरों ने किया था।

अंग्रेजों ने कई अन्य महत्वपूर्ण युद्ध और संधियां की जिसके फलस्वरूप 1947 ई. में अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता तक, अंग्रेजों का भारत पर एक छत्र राज रहा। यूरोपीय कंपनियों में अंग्रजों ने भारत पर सर्वाधिक शासन किया। अंग्रेजों ने लगभग 200 वर्षों तक भारत पर राज किया। अंग्रेजों द्वारा

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

क्रमशः सूरत, मद्रास (वर्तमान चेन्नई), बंबई (वर्तमान मुंबई) तथा कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में अपने व्यापार केंद्र स्थापित किये गए थे। अंग्रेजों का उद्देश्य भारत में गन्ना, अफीम, चाय, कहवा, पटसन आदि की खेती कर इनकों सस्ते दामों पर खरीदकर इंग्लैंड भेजना था। जिस कारण अंग्रेजों ने भारत में महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रेल लाइन बिछायीं तथा सड़कों का निर्माण भी करवाया। साथ ही अंग्रेजों का उद्देश्य ब्रिटेन से भारत में आयातित किये गए महंगे कपड़ों को भारत में बेचना भी था।

फ्रांसीसी: अन्य यूरोपीय कंपनियों की तुलना में फ्रांसीसी भारत में देर से आये।लुई चौदहवें फ्रांस के मंत्री कॉलबर्ट द्वारा 1664ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई,जिसे कंपने देस इण्दसे औरियंटलेस कहा गया।

- फ्रांस की व्यापारिक कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार तथा वित्तीय संसाधन प्राप्त था। इसीलिए इसे एक सरकारी व्यापारिक कंपनी कहा जाता था।
- 1667ई. में फ्रेंसिस कैरी के नेतृत्व में एक अभियान दल भारत के ले रवाना हुआ।जिसने 1668ई. में सूरत में अपने पहले व्यापारिक कारखाने की स्थापना की।
- 1669 में मर्कारा ने गोलकुंडा के सुल्तान से अनुमति प्राप्त कर मसुलीपट्नम में दूसरी फ्रेंच फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1672ई. में एडमिरल डेला हे ने गोलकुंडा के सुल्तान को परास्त कर सैनथोमी को छीन लिया।
- 1673ई. में कंपनी के निदेशक फ्रेंसिस मार्टिन ने वलिकोण्डापुर के सूबेदार शेरखां लोदी से पर्दुचुरी नामक एक गांव प्राप्त किया, जिसे कालांतर में पांडिचेरी के नाम से जाना जाता है।
- 1674ई. में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खां द्वारा फ्रांसीसियों को प्रदत्त स्थान पर 1690-92ई. को चंद्रनगर की स्थापना की।

उपसंहार

भारतीय इतिहास में व्यापार-वाणिज्य की शुरुआत हड़प्पा काल से मानी जाती है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक सम्पन्नता, आध्यात्मिक उपलब्धियां, दर्शन, कला आदि से प्रभावित होकर मध्यकाल में बहुत से व्यापारियों एवं यात्रियों का यहाँ आगमन हुआ । किन्तु, 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं 17 वीं शताब्दी के पूरबार्द्ध के मध्य भारत में व्यापार के प्रारंभिक उद्देश्यों

से प्रवेश करने वाली यूरोपीय कंपनियों ने यहाँ की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को लगभग 350 वर्षों तक प्रभावित किया। इन विदेशी शक्तियों में पुर्तगाली प्रथम थे। इनक पश्चात डच, अंग्रेज, डेनिश तथा फ्राँसीसी आए। डचों के अंग्रेजों से पहले भारत आने के बावजूद ब्रिटिश 'ईस्ट इंडिया कंपनी" को स्थापना डच ईस्ट इंडिया कंपनी ' से पहले हुई। यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कंपनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया । भारत के लिये नए समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई, 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की । वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन (यह कॉलीकट के शासक को उपाधि थी) द्वारा किया गया। तत्कालीन भारतीय व्यापार पर अधिकार रखने वाले व्यापारियों को जमोरिन का यह व्यवहार पसंद नही आया, अत: उनके द्वारा पुर्तगालियों का विरोध किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] कुमार, उमेश, (1990), कौटिल्यास थॉट ऑन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन : नई दिल्ली, नेशनल बुक ऑर्गेनाइजेशन पब्लिशर्स।

[2] कृष्णराव, एम.बी. (1961), कौटिलीय अर्थशास्त्र का सर्वेक्षण : आगरा, रतन प्रकाशन मंदिर, राजामण्डी।

[3] केला भगवान दास (1933), कौंटिल्य के आर्थिक विचार : वृन्दावन, भारतीय ग्रंथमाला।

[4] केला, भगवानदास (वि.स. 2005) कौटल्य की शासन पद्धति : प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, (श्रीराम प्रताप शास्त्री, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग)।

[5] गाबा, ओमप्रकाश, (2004) राजनीतिक सिद्धांत की रूपरेखा : नोएडा, मयूर पेपरबेक्स।

[6] गुप्त, जमनालाल, केला, भगवानदास (1947), कौटिल्य के आर्थिक विचार : प्रयाग, भारतीय ग्रन्थमाला।

[7] गुप्ता, रमेशचन्द्र (1989), अर्ली हिन्दु सिविलाइजेशन : दिल्ली, सुनिता पब्लिकेशन्स।

[8] गुहा, रामचन्द्र (2012), भारत गांधी के बाद, दुनिया के विशालतम लोकतंत्र का इतिहास : पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स।